

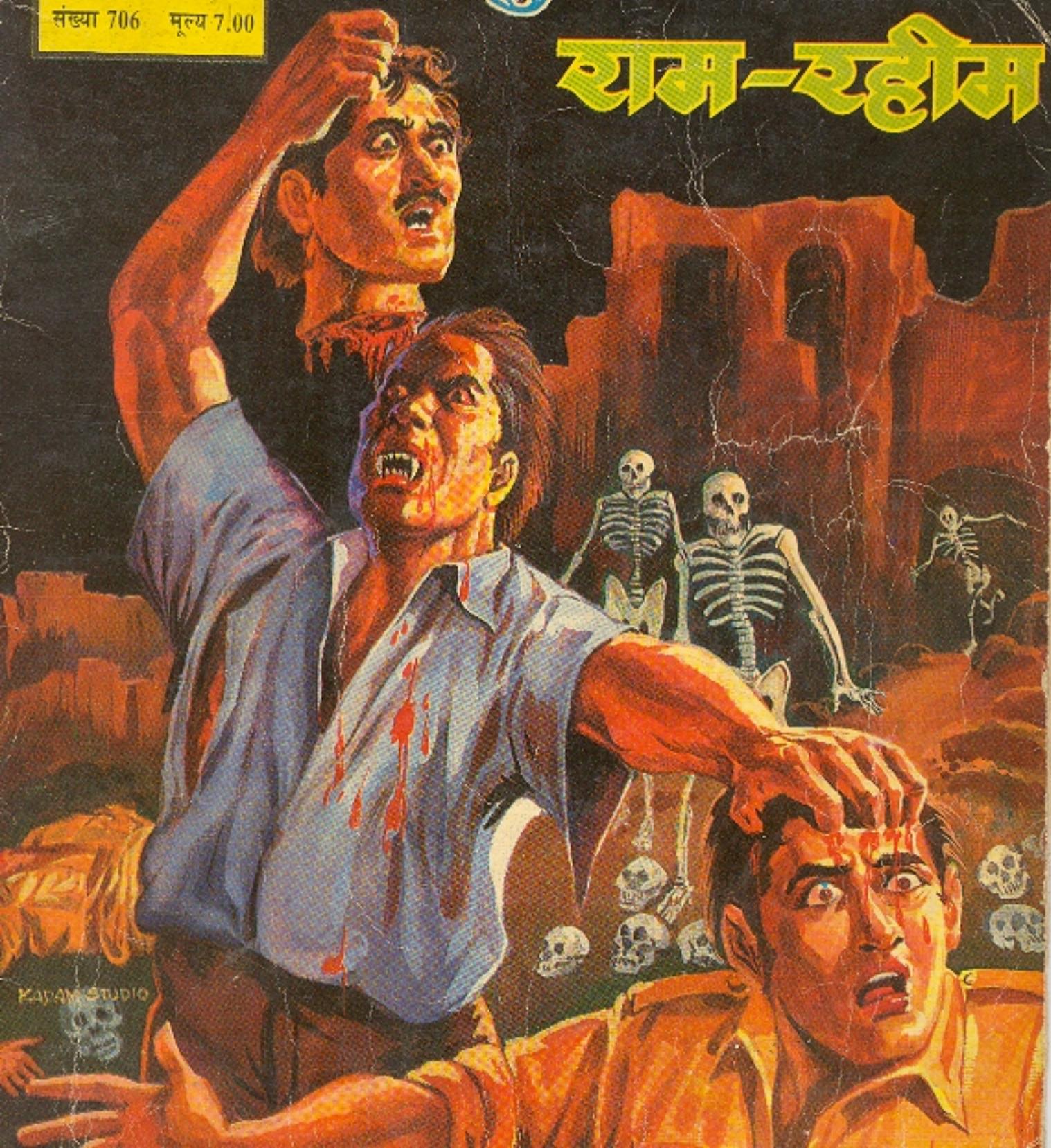
मनोज

कॉमिक्स

संख्या 706 मूल्य 7.00

झापेला की वापरा

याम-रहीम



अवतार की बातें



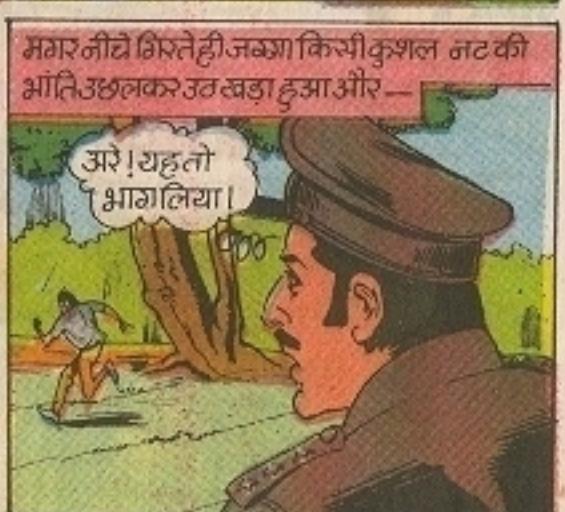
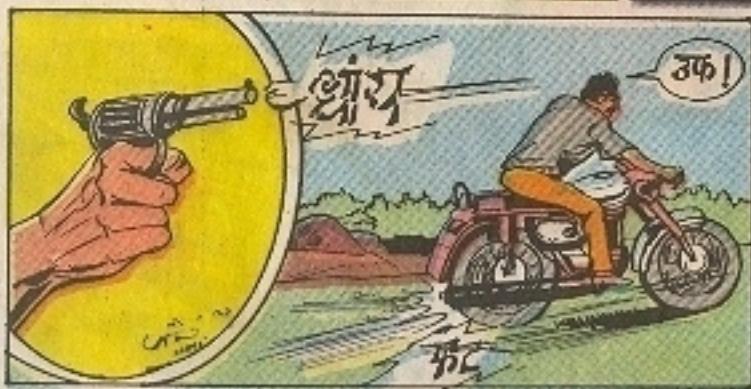
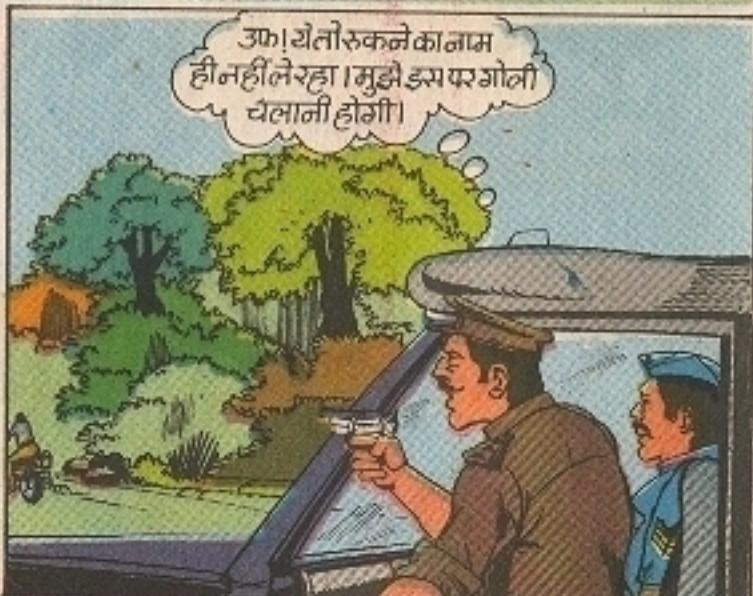
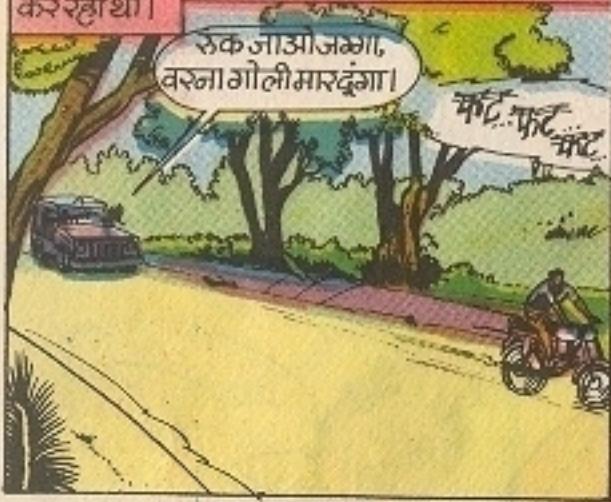
झाक युला की वापसी

• लेखक : संदीप-सावन

• चित्रांकन : कदम रुद्रियो

डबल सीक्रेट एजेंट ००१ राम-रहीम सीश ज

एक शाम, राजनगर शहर से बाहर जाने वाली सड़क पर एक पुलिस जीप हवाबात से फैला एक मुजरिम का पीछा कर रही थी।



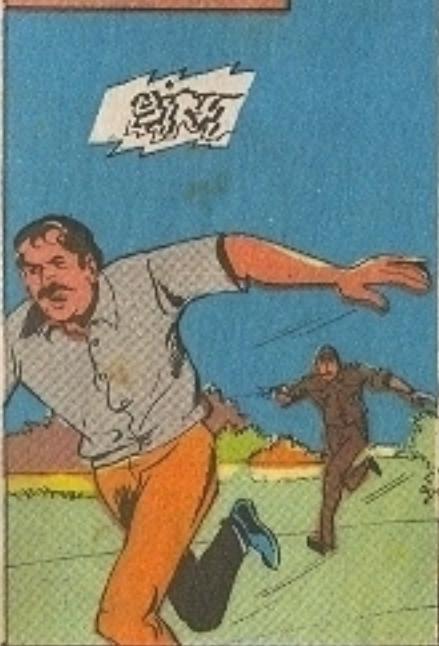
झांचुला की वापसी

इंस्ट्रीक्टर और हवलदार ने जम्मा का वीथा किया।

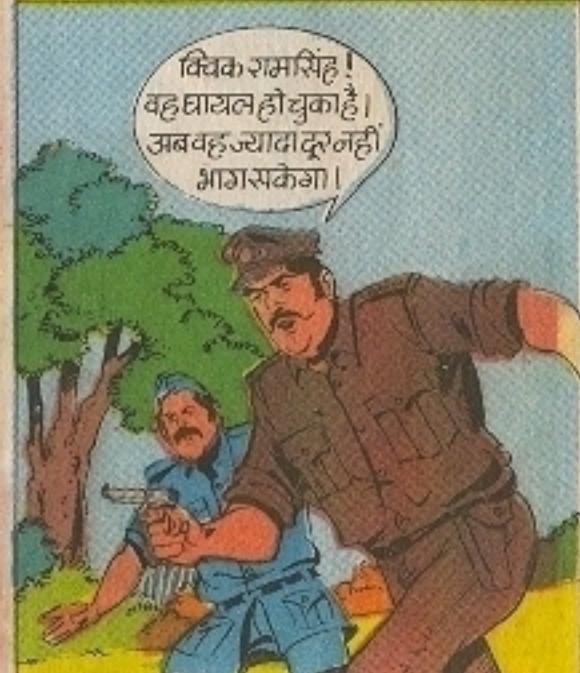
फिर जम्मा को नसकते देखा—



अगले पल इंस्ट्रीक्टर ने जम्मा की टंग का निशाना साधा और—



मरम्भोली भगने के बावजूद भी जम्मा भागता रहा।



मनोज कॉमिक्स

जैसे ही जग्गा छड़करी में परिष्ठ हआ।



कुछ देर बाद खंडहर के भीतर—

रामसिंह! तुम उस तरफ देखो, मैं इस तरफ देखता हूँ।

ओ. के. स्पर!



पिर दोनों जग्गा को खोजने के लिए विश्रीत दिशा ओर में बढ़ गये।



शोही देर बाद—



तभी—

आहा! बवाजाँ!!!

अरे। येतो हवलदार रामसिंह की आवाज है, लेकिन उसे क्या हुआ है...





जिस पिशाच यरीखे जग्गा ने ऐसी ही अपने लम्बे रूप दोत
हृष्टलदार की बरसन की ओर बढ़ाये, हृष्टलदार रामसिंह
हृष्टल हीते बकरे की भाति चीख उठा—



तभी आंधी-तूफान की तरह इंस्पेक्टर बहुपद्धति हुए।

रामसिंह की आवाज
इधर से ही आई थी।



फिर उसका मौसम हुआ तो—

हे भगवान्! यह जगता तो
हम गिज नहीं हो सकता। यह तो
कोई पिशाच मालूम पड़ता है,
मगर जगता अद्यानक
पिशाच कैसे बन गया?

क्षयर...
क्षयर...



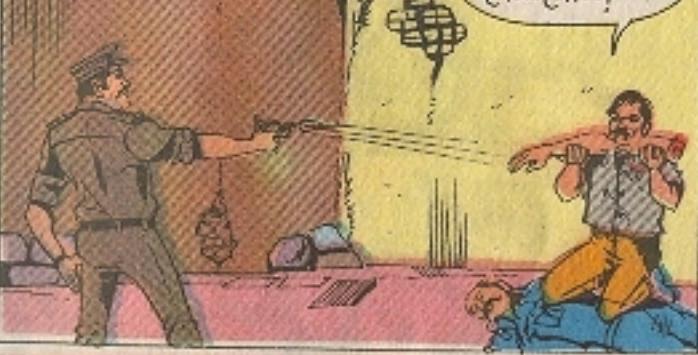
अगले ही पल उसने आगे आयको संभाला और—

ध्वंश

ध्वंश

ध्वंश

हा... हा... हा!
एक शिकार और... हा...
हा... हा...!



ओ माई गॉड!

इस पर तो गौलियाँ
का कोई प्रभाव ही
नहीं पड़ रहा है।
आखिर यह...।

ध्वंश



तभी जगा अद्यानक अंदर और इंस्पेक्टर की ओर बढ़ा।

हा... हा... हा!

मैं जगा नहीं, बल्कि इक्षुला
बालक हूँ इंस्पेक्टर। अब तुम्हारे
मुजरिम जग्गा कैश शीर पर मेरा कब्जा
है। अब तुम्हारा भी मूल पीकर वर्षों
बाट मैं तुम्हारी पीले की यास
चली तरह बुझोगी।

है! इक्षुला बालक।



झाक्युला की वापसी

अगले ही पल इंस्पेक्टर पलटकर आग लड़ा हुआ।



तभी पिशाच बना जड़ा इंस्पेक्टर पलटा।



इंस्पेक्टर, पिशाच बने जड़ा सब नहीं पाया और—



फिर वह इंस्पेक्टर के मास की शवाद लै- लेकर खाने लगा।



कुछ दैरबाद

हा...हा...हा।
आज बहुत दिनों बाद मुझे इस
भूतमहल से मुक्ति मिली है।

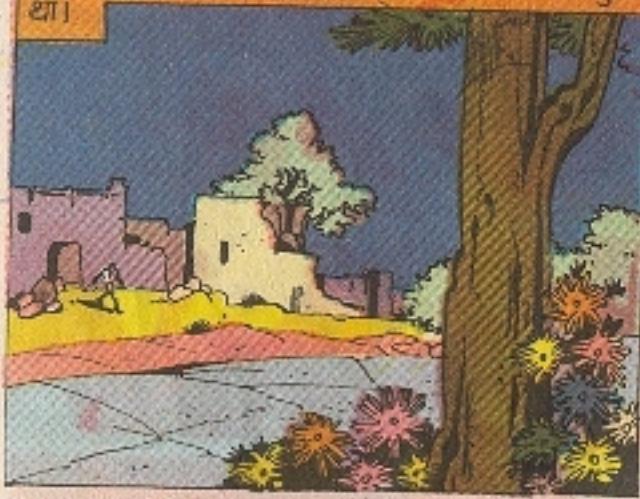


चलते-चलते एक एक उत्तरकी भाँखों से चिंगारियां-सीफूटने लगीं।

उब जब तक
शहर जाकर मैं आपने
दुष्मन शम-रहीम का
खून नहीं पी लूँगा, मुझे
दैन नहीं मिलेगा।

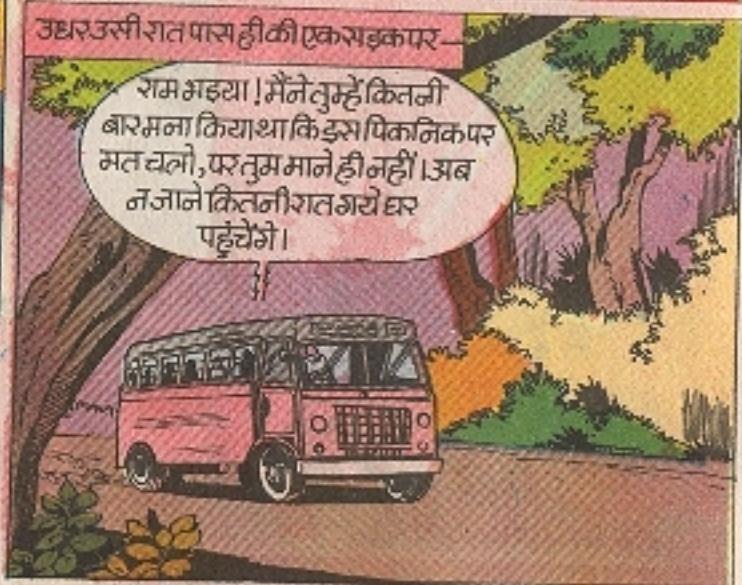


जब हाकर्युला बना जग्गा उत्तर छुट्टर हो चले भूतमहल से
बाहर निकला, तब तक वहाँ और घटाटों पांछों से फैल वुका
था।



उद्धर उसी रात पास ही की एक सड़क पर-

राम भड़या! मैंने तुम्हें कितनी
बार मना किया था कि इस पिकानिक पर
मत घलो, पर तुम माने ही नहीं। अब
न जाने कितनी रात गये घर
पहुँचेंगे।



अब दृप भी रहो यार! कॉलेज
के द्वेर सारे स्टूडेंट पिकनिक पर आये थे,
आगर हम भी आगये तो कौन सा तुफ़ज़न मच
गया। अब तुम ही बताओ, अगर बस का पहिया
दोबार पंक्तर नहीं हो जाता तो क्या हम समय
पर धर नहीं पहुँच जाते?

मुझे तो लगता है, यह
स्टारा बस आज रात हमारी खाट
खड़ी और बिस्तर गौलकरके
छोड़ेंगी।

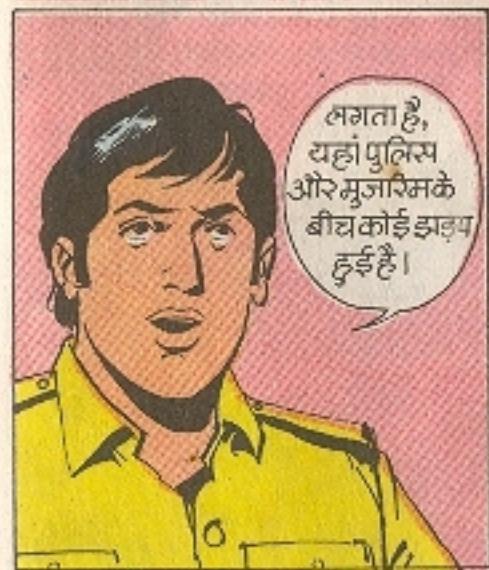




बस से नीचे उत्तरकाश मनोज टॉर्टजला लीथी।



* भूतमहल वाले के साके वारेन जानने के लिये राम-रहीम के बान दास कॉमिक्स 'भूतमहल व इक्युला बालक' पढ़ें।



कुछ देरबाद भूतमहल में प्रविष्ट हो जबते एक कमरे में
पड़ूंचे—



उफ! लगता है,
कातिल कोई बहुत तृप्ति
कर आदमी रहा
होगा।

नहीं रहीम, योकाम
किसी इंसान का नहीं हो
सकता। कोई भी इंसान चाहे
किसी नहीं क्रूर कर्यांनहीं,
जैकिन इस तरह हृदियों
से मांस नोचकर नहीं
फेंक सकता।



राम ने टॉर्च की सेवनी में बारी की
सेलाशों का मुआयना किया।
तत्पश्चात्—

मुझे तो
यह काम ड्राक्युला क्या कहा,
बालक का ही यह काम
लगता है ड्राक्युला
रहीम।



हो, यह देखो, इसकी
गरदन पर दो दांतों के निशान
हैं। लगता है, ड्राक्युला
बालक फिर से जी
उठा है।

हाँ!
अब हम क्या
करें?



कुछ देर की तलाश के बाद भी जब ड्राक्युला
बालक का ही नहीं मिला तो—

लगता है,
ड्राक्युला बालक के अपनी
खूनी प्यास बुझाने इस
भूतमहल से बाहर
निकल गया है।

ओह!

तभी राम के दिमाग में एक उन्न्य विद्यार
उभरा।

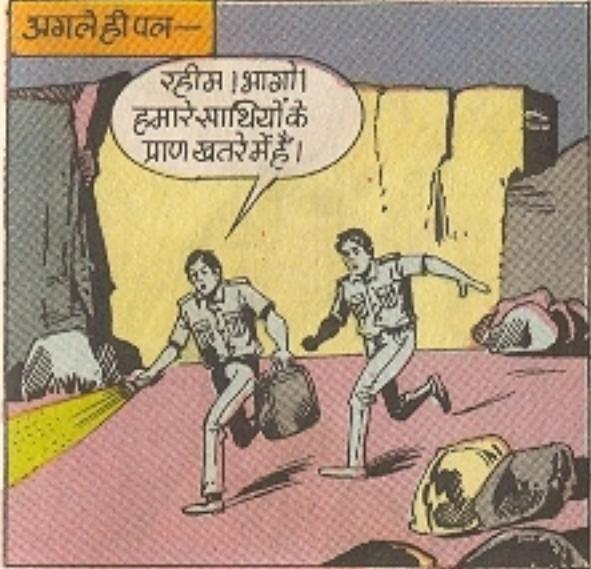
रहीम! अगर
कहीं ड्राक्युला बालक
को लेज बस तक पहुंच गया
हो गा तो गजब ही
जाएगा।

ओ जो!



झाव युला का वापसा

अगले ही पल—



और फिर रहीम के सवार ही ते ही गमने जीव को बस की टिक्का में दौड़ा दिया।



उधर—



तभी उन्हें पेड़ों के पीछे से किसी के तेजी से चलने की आवाजें सुनाई दीं।



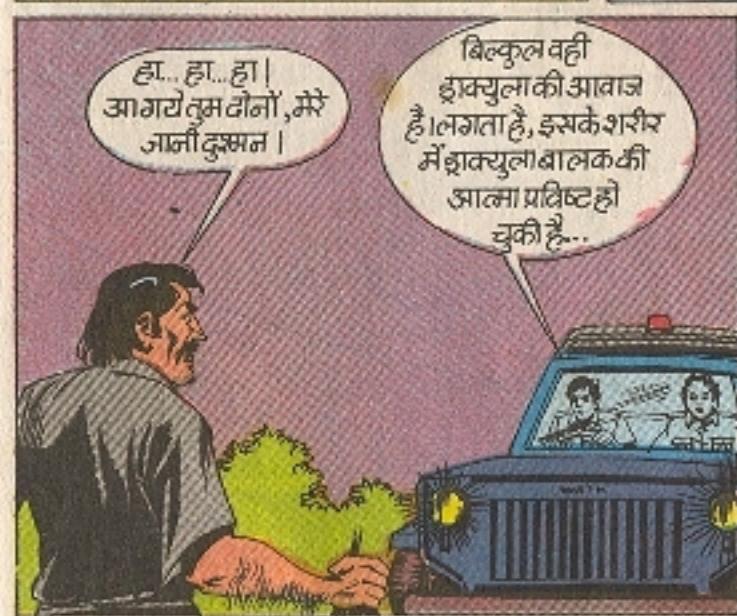
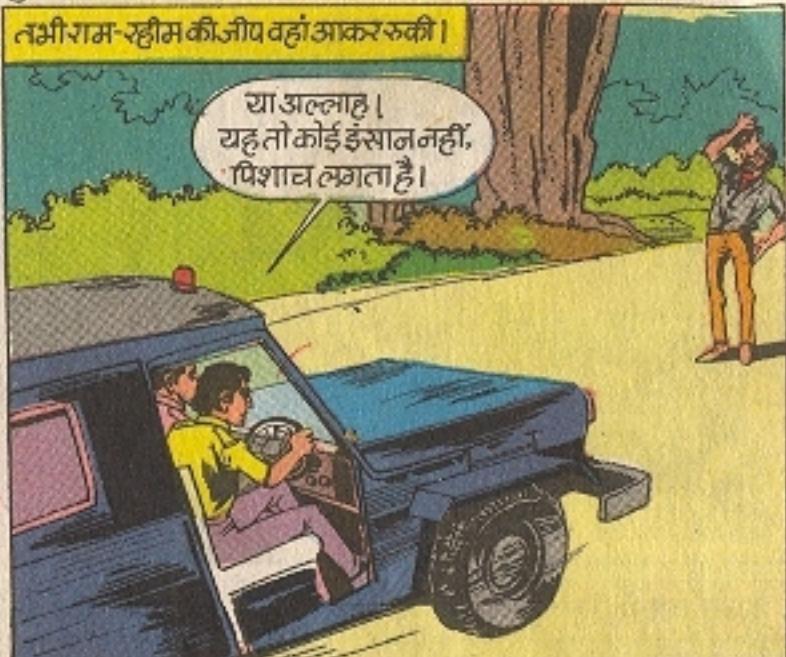
लोकिन अगले ही पल—



फिर पिशाच जब्ता गुरता हुआ जैसे ही उन लोगों की
ओर बढ़ा—



झाक्युला की वापसी



और—



आह!



धड़का

ओ!



ओ!

आह!



बदला...बदला!
गुरु...रं...।

रहीम! सावधान
रहना।



आह!



हा... हा...
हा! आज तुम दोनों
मेरे हाथों से
बचाऊन हीं।



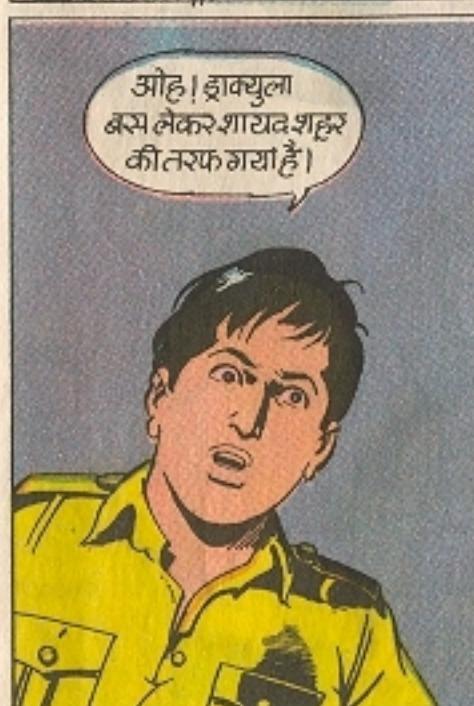
रहीम! मागो!

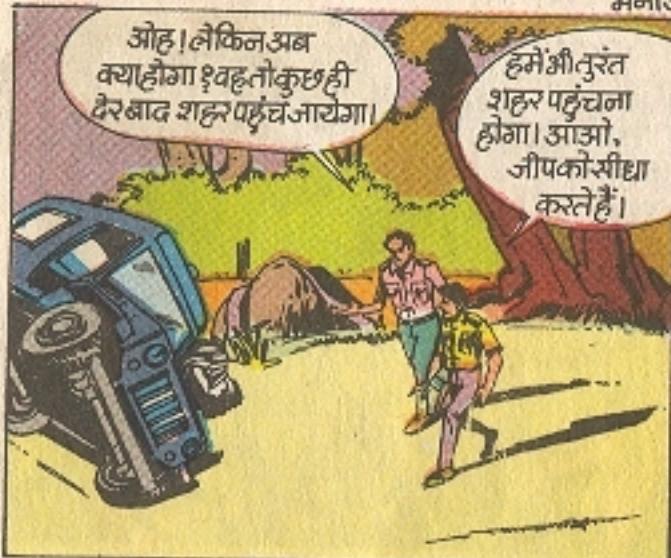
हा... हा... हा!
माग कर कहां जाओगे
चहो?

झाक्युला की वापसी

लोकिनपिशाचबनाजवातेजटीडमेंरामरहीमकामुकाबलानहींकरपाया।

भाग गये, पर
कबतक बटोंगे मेरेहाथा
से। जब तक मैं इनका खलनहीं
पीलंगा, मुझे शांति नहीं
मिलेगी...





झाक्युला का वापसी

फिर राम से संबंधित विचारें करने के पश्चात ठीक मुख्यमन्त्री ने किसी अधिकारी से कोन पर संपर्क किया और उसे आवश्यक हितयत देने लगे।

यह... यह... शहर की ज़ंगल
वाली सीमा पर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी
करदो। क्या नम्बर ठीकी ही 167 के
झाफ़वर को देखते ही गोली
मारदो...



कुछ ही देर में—

शहर में एक भयानक जौतान, जो कि झाक्युला बालक है, प्रवेश करने जा रहा है। अतः आप सब से लिंगेवन हैं कि आप आपने घरों से बाहर न निकलें...

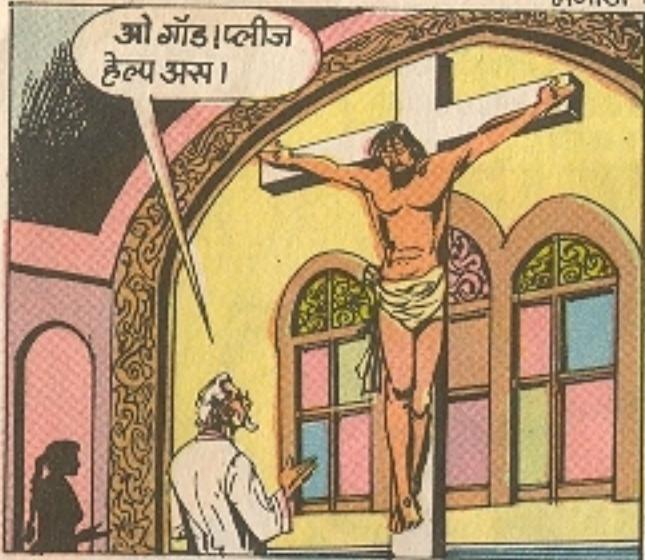


झाक्युला बालक के पुनः जीवित होने की सब सुनकर पूरे शहर में हँगामा मच गया।



हे भगवान्। यह क्या हुआ? झाक्युला बालक की आत्मा किसी इसान के शरीर में प्रविष्ट हो गई। अब क्या होगा?

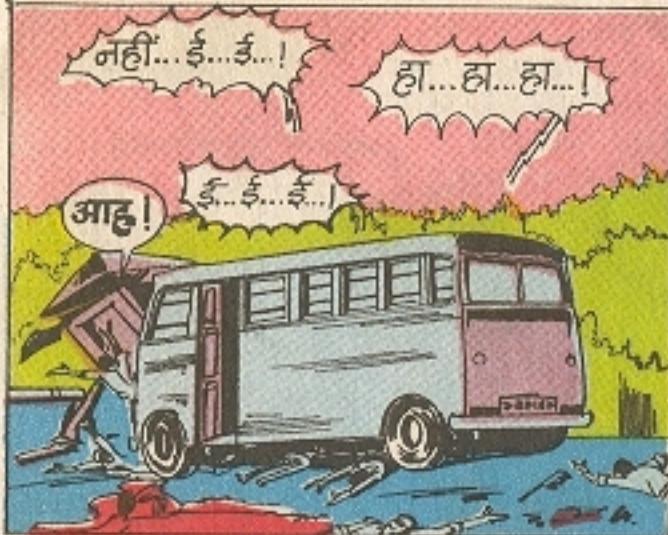




जबकि शहर में व्याप्त भय से दस्कुद्ध बदमाश हस्तियां फायदा उठाने की घोजना बना रहे थे ।







चारोंतरफ मरघट कास्या स्पनाटा धाते ही वह बस से नीचे उतरा।



और पिलवह वहां चारोंतरफ कैलो खून से अपनी प्यास बुझाने लगा।



और जब राम-रहीम बॉर्डर पर पहुंचे—

झाक्युला मतलब,
झाक्युला शहर में
प्रवेश कर दूका है। अब
शहर में भीत बाही
निश्चित है।

उक्त गांव का कृष्णदेवजने
से ही पता लगता है कि उस दरिंदे
ने ये सब हत्याएं कितनी
तृशंसता से की होंगी।



कुछ दौर बाद राम-रहीम चीफ मुख्याजी की कोठी में थे।



नोसर। द्वाक्युला बालक को हॉक्टर शैतान ने तैयार किया था। और डॉक्टर शैतान को शस्ती दैहाजिक विद्या प्रोफेसर दिवाकर ने ही सिखाई थी, इसलिए यह वही जानते होंगे कि द्वाक्युला बालक को कैसे समाप्त किया जा सकता है।



ओह! लोकिन मेरी समझ में यह नहीं आया कि आज जब डॉक्टर शैतान जीवित नहीं हैं, तो फिर उस द्वाक्युला को किसने और कैसे जीवित कर दिया?

चीफ! बस यही एक ऐसा रहस्य है, जो अभी तक हमारी भी समझ में नहीं आया है...



...परन्तु मुझे पूरा विश्वास है कि प्रोफेसर दिवाकर के मिलने के बाद हम सारा रहस्य समझ सकते हैं।

ठीक है। मैं अभी प्रोफेसर दिवाकर की खोज शुरू करता हूँ...



द्राक्षुला की वापसी

...जैसे ही मुझे कुछ पता
चलेगा, मैं तुम्हें सूचित कर दूँगा।
दैसे मैंने तीनों घटनास्थलों पर पुलिस
फोर्स को रवाना करवा दिया
है।

यह आपने अच्छा
किया थी। अब हम चलते हैं।
आज कल मम्मी-डॉक्टर सौबाहर
गये हैं, इसमें हम यहां से
सीढ़ी द्राक्षुला बालक की ओज
में ही निकलेंगे।

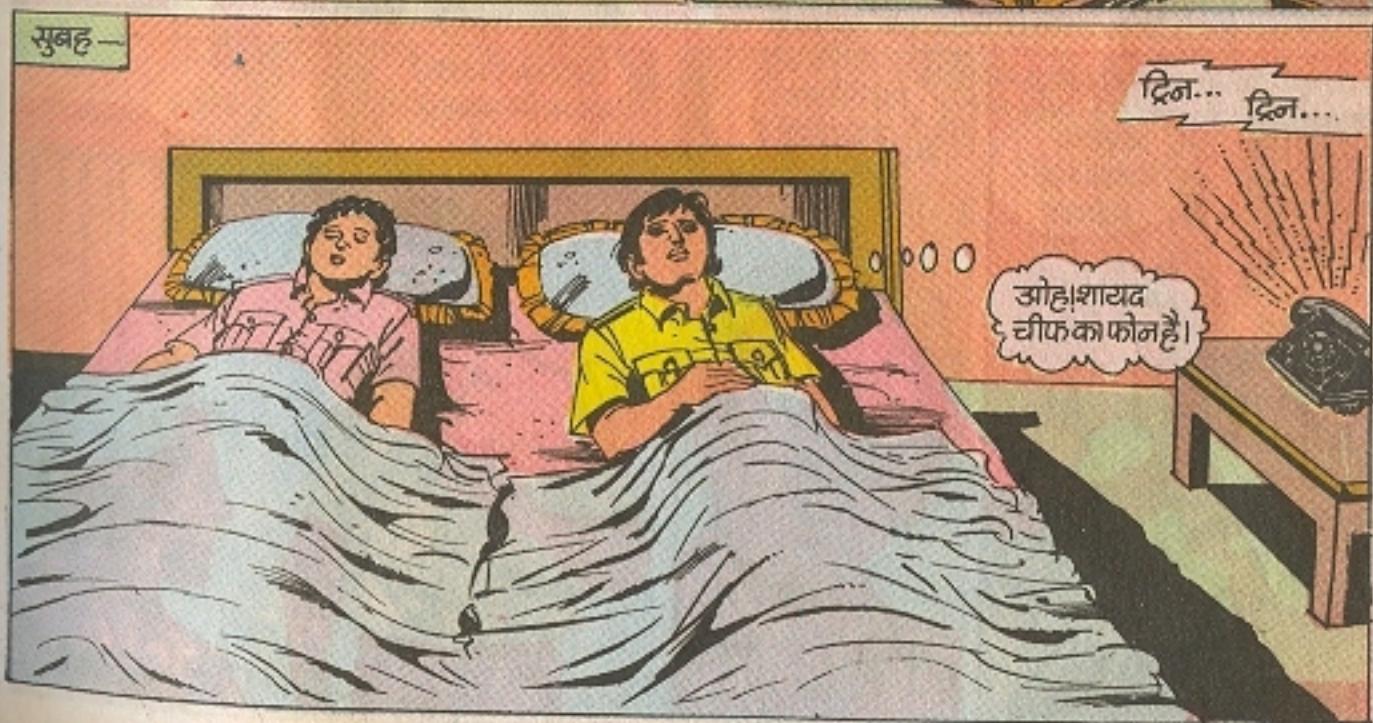
फिराम-रही मैं एक टैक्सी पकड़कर शाकी की सारी रात द्राक्षुला
की ओज में शहर का चक्कर लगाते रहे।

और अन्त में हताश हो उपने कस्त में आकर सो गये।



सुबह—

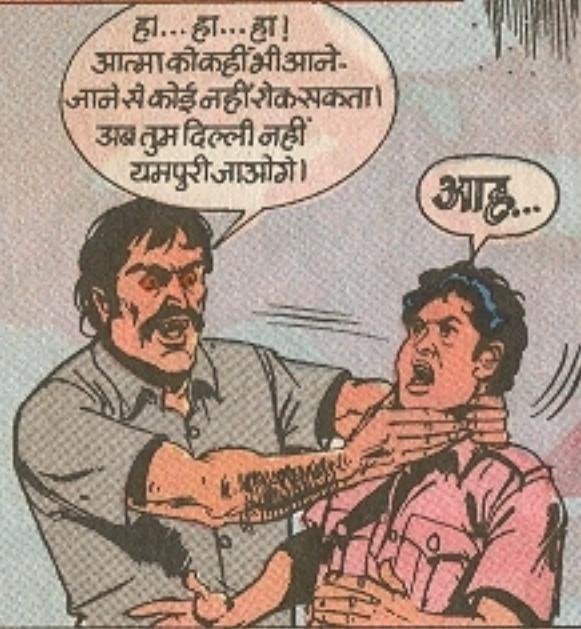
दिन... दिन...





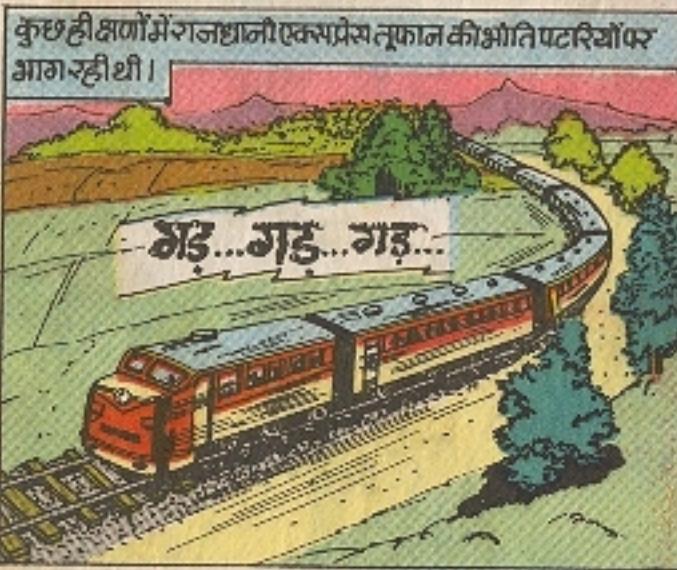


झाक्युला ने झपटकर रहीम की ग़रदन थाम ली।

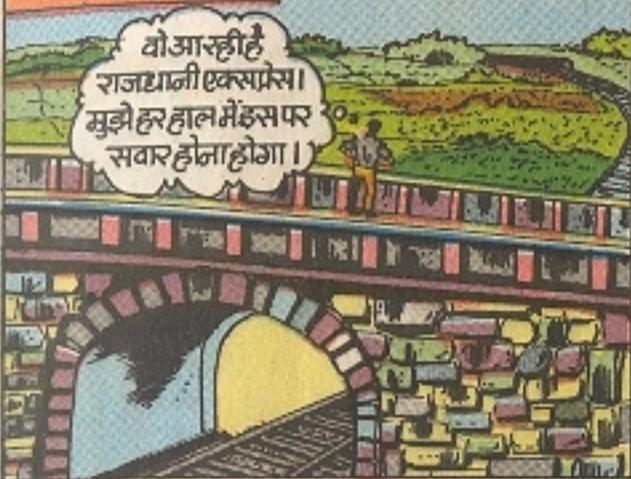




मनोज कॉमिक्स



लोकिन राम-रहीम का सोबना गलत था। द्राक्षुला से उनका पीछा तभी हुवा नहीं था।



ओर फिर जैसे ही ट्रेन पुल के नीचे से गुजरी—



- क्या राजदूतानी एक्सप्रेस दिल्ली पहुंच सकी है?
- क्या राम-रहीम द्राक्षुला के छूनी पंजे से बच सके हैं?
- अपराधियों के उस गिराह का क्या हुआ, जो द्राक्षुला का आपहरण करना चाहता था है?
- क्या राम-रहीम प्रोफेसर दिवाकर से जिल भक्ति?
- आखिर द्राक्षुला की वापसी किसे हुई है?
- क्या राम-रहीम द्राक्षुला को समाप्त कर सके हैं?
- ऐसे व अन्य द्वे भारे प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए 'मनीज कॉमिक्स' में इस रोमांचकारी कथा का अगला आगा पढ़ें—'द्राक्षुला दिल्ली में'।



द्राक्षुला दिल्ली में